संख्यावाचक शब्द और उनका प्रयोग

(क) **संख्यावाचक शब्द विशेषण** भी होते हैं और **विशेष्य** भी। **एक** से अष्टादशन् तक संख्याएँ विशेषण ही होती हैं। १९ से परार्ध तक संख्याएँ कहीं विशेष्य और कहीं विशेषण होती हैं। "एक" शब्द एकवचनान्त, "द्वि" द्विवचनान्त तथा "त्रि" से "अष्टादशन्" तक बहुवचनान्त होते हैं। एक, द्वि, त्रि, चतुर शब्दों का लिङ्ग अपने विशेष्य के अनुसार होता है और विशेष्य के अनुसार ही उनका लिङ्ग बदलता रहता है, यथा—"एकः बालकः, एका बालिका, एकं फलम्। द्वौ बालकौ, द्वे बालिके, द्वे फले। त्रयः बालकाः, तिस्रः बालिकाः, त्रीणि फलानि। चत्वारः छात्राः, चतस्रः गावः, चत्वारि कलत्राणि"। (अष्टन् और पञ्चन् को छोड़कर) पञ्चन् से अष्टादशन् तक के रूप पञ्चन् शब्द के समान होते हैं। इनके रूप सब लिङ्गों में एक जैसे होते हैं, यथा—"पञ्च मानवाः, सप्त ग्रन्थाः, अष्टादश स्त्रियः, नव पुस्तकानि" इत्यादि।

(ख) **ऊनविंशतिः** (१९), **विंशतिः** (२०), **त्रिंशत्** (३०), **चत्वारिंशत्** (४०), **पञ्चाशत्** (५०), **षष्टिः** (६०), **सप्ततिः** (७०), **अशीतिः** (८०), **नवतिः** (९०), **शतम्** (१००), **सहस्रम्** (१०००), **अयुतम्** (१००००), **लक्षम्** (१००००००), **नियुतम्** (१०००००००), **कोटिः** (स्त्री. १००००००००) इत्यादि * संख्यावाचक शब्द यदि अपनी संख्या को सूचित करें अर्थात् 'विंशति' के द्वारा केवल २० ही का ज्ञान हो तब ये संख्याएँ एकवचनान्त होती हैं, किन्तु यदि उससे दो अथवा तीन विंशति या उससे भी अधिक का ग्रहण हो तो वहाँ द्विवचन अथवा बहुवचन होगा, यथा—'बीस (२०) फल लाओ'। इसमें "बीस" तो एक है पर फल बहुत (अनेक) हैं, इसलिए विंशति आदि शब्द इस अवस्था में एकवचनान्त होंगे, चाहे उनका विशेष्य बहुवचनान्त ही क्यो न हो। इनकी विभक्ति तो विशेष्य के अनुसार होती है पर वचन और लिङ्ग नहीं। इस लिए इसकी संस्कृत हुई:— **"विंशतिम् फलानि आनय"**। अब एक दूसरा उदाहरण लीजिये—"दो बीस (४०) फल लाओ'। यहाँ दो 'विंशति' होने से "विंशति" शब्द द्विवचनान्त होगा। अतः इस वाक्य की संस्कृत होगी:—**"फलानां द्वे विंशती आनय"**। इसी प्रकार ६० कहने पर—**"फलानां तिस्रः विंशतीः आनय"** इत्यादि। इसी प्रकार—

---

* विंशत्यादेरनावृत्तौ। आवृत्ति के न होने पर 'विंशति' आदि संख्यावाचक शब्द सदा एकवचनान्त होते हैं।

"५० बकरियाँ घूम रही हैं"—"**पञ्चाशत् अजाः विचरन्ति**"—"६० छात्र क्रीडा-क्षेत्र में घूम रहे हैं"—"षष्टिः छात्राः क्रीडा-क्षेत्रे विचरन्ति"—"९० लड़के स्कूल जा रहे हैं"—"**नवतिः बालकाःविद्यालयं गच्छन्ति**"।

(ग) ऊनविंशति से लेकर नवनवति (९९) तक शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं, यथा—तीस घोड़े सुन्दर हैं, "**अश्वानां सा त्रिंशत् सुन्दरी**"। बीस छात्र आये हैं, "**छात्राणां विंशतिः आगतवती**"। यहाँ त्रिंशत् और विंशति शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं, इसीलिए "सा" "सुन्दरी" और "आगतवती" इसके स्त्रीलिङ्ग विशेषण हैं।

विशेष—विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति, शब्दों के रूप मति शब्द की तरह चलते हैं। **त्रिंशत्, चत्वारिंशत्,** और **पञ्चाशत्** के रूप 'भूभृत्' की तरह।

(घ) सब संख्यावाचक शब्द विशेषण की तरह प्रयुक्त होते है, किन्तु अनेक स्थलों पर इनका विशेष्य की तरह भी व्यवहार होता है। उस समय क्रिया का वचन एकवचन के अनुसार होता है, यथा—२५ बालक आये हैं '**बालकानां पञ्चविंशतिः आगवती**" अथवा "पञ्चविंशतिः बालकाः आगवन्तः"। हम ३६ यहाँ हैं— "**वयं षट्त्रिंशत् अत्र वर्त्तामहे**" अथवा "अस्माकं षट् त्रिंशत् अत्र वर्तते"। ४८ अध्यापक हैं—"**अध्यापकानां अष्टचत्वारिंशत् अस्ति**" अथवा "अष्टचत्वारिंशत् अध्यापकाः सन्ति"। २० कैंडीडेट्स से साक्षात्कार हुआ-"**विंशत्या आवेदकैः सह साक्षात्कारः अभवत्**" अथवा "आवेदकानां विंशत्या सह साक्षात्कारः अभवत्" इत्यादि।

(ङ) शत से पहले की, दशन्, विंशति इत्यादि संख्याओं के साथ एक, द्वि, त्रि इत्यादि लघु संख्या लगाने से अनेक संख्याएँ बनती हैं, यथा—"विंशति" वृहत्तर संख्यावाचक है, और 'एक' लघु संख्यावाचक। अब 'एक' इस लघु संख्यावाचक शब्द को 'विंशति' के पूर्व लगाने से "एकविंशति" (२१) बन जायगा इस प्रकार संख्यावाचक शब्द बनाने के कुछ नियम सुविधा के लिए यहाँ दिये जाते हैं—

(१) "दशन्" शब्द परे रहने पर एक के स्थान में "**एका**" (अशीति को छोड़कर) शत से पहिले के संख्यावाचक शब्दों के परे रहने पर 'द्वि' के स्थान में **द्वा,** 'त्रि' के स्थान में **त्रयः** और अष्टन् के स्थान में **अष्टा** आदेश हो जाता है। चत्वारिंशत् आदि शब्द परे होने पर ये आदेश विकल्प से होते हैं, यथा—"**एकादशगावः**" द्विचत्वारिंशत् (द्वाचत्वारिंशत्) फलानि। त्रिषष्टिः (त्रयःषष्टिर्वा) पठकाः विद्यालयमागच्छन्ति"। "**अष्टपञ्चाशत्** (अष्टापञ्चाशत्) **पुस्तकानि दृश्यन्ते**"। "एकत्रिंशतं मत्स्यान् आनय"। "**त्रयः सप्ततिः** (**त्रिसप्ततिः**) **चौराः धृताः**"। "**द्वाविंशतिः वानराः गच्छन्ति**" इत्यादि। अशीति शब्द परे होने पर "**द्व्यशीतिः त्र्यशीतिः**" इस प्रकार रूप होंगे।

(२) 'शत' आदि संख्यावाचक शब्दों के साथ लघु संख्या के मिलाने के लिए लघु संख्या के साथ **"अधिक"** वा **"उत्तर"** शब्द भी वृहत्तर संख्या के बाद में लगा दिया जाता है, यथा--**एक सौ तेरह बालक खेल रहे हैं"** यहाँ तेरह लघु संख्या है, इसकी संस्कृत है "त्रयोदश" । इसके आगे अधिक लगाकर इसके बाद "शतं" यह वृहत्तर संख्या लगाने से "एक सौ तेरह" की संस्कृत हुई "त्रयोदशाधिक-शतम्" । इसलिए इस वाक्य का अनुवाद हुआ "त्रयोदशाधिकशतं **छात्राः क्रीडन्ति**" अथवा पूर्वोक्त नियम के अनुसार 'छात्राणां त्रयोदशाधिकशतं **क्रीडति**' । इसी तरह—**१००००१**—**"एकाधिकं लक्षम्"** । **२०१२**—**"द्वादशाधिकं द्विसहस्रम्"**, चाहे संख्या कितनी बड़ी भी क्यों न हो उसका इसी तरह अनुवाद किया जाता है ।

(३) शत, सहस्र इत्यादि संख्याओं के साथ यदि उनका आधा (५०, ५०० आदि) और साथ हो तो **"साढ़े"** चौथाई साथ हो (२५, २५० आदि) तो **"सपादं"** और चौथाई कम हो तो **"पादोन"** शब्द का उनके साथ प्रयोग किया जाता है, यथा—**"मैंने भागवत के ४५० श्लोक पढ़े हैं"**; **"अहं भागवतस्य श्लोकानां साद्ध-शत-चतुष्टयमपठम्"**, **"वह १२५ फल लाया"**; **"स सपादशतम् फलानि आनीतवान्"** । **"इस पुस्तक का मूल्य सवा रुपया है"**; **"अस्य पुस्तकस्य मूल्यं सपाद-रौप्यमुद्रा"** । **"१७५० पुस्तकें थीं"**; **"पुस्तकानां पादोन-सहस्रद्वयमासीत्"** । **"१२५ फल का मूल्य ७॥) है"**; **"सपाद-शतस्य फलानां मूल्यं सार्ध-मुद्रा-सप्तकम्"** । **"श्रीचैतन्य १९८५ ई० में उत्पन्न हुए थे"**; **"श्री चैतन्यः पञ्चदशोन-साद्ध-सहस्रतमे खिस्ताब्दे अजायत"** ।

विशेष—शत, शहस्र इत्यादि के पहले द्वि, त्रि आदि के आने पर, 'समाहार द्विगु हो जाने से वे विशेषण नहीं रहते, क्योंकि समाहार द्विगु हो जाने पर वे विशेष्य पद हो जाते हैं, यथा—**"छात्राणां द्विशती, त्रिशती, पञ्चशती वा याति"** "यहाँ ५०० पण्डित हैं"; **"पण्डितानां पञ्चशती अत्र तिष्ठति"** । "राम की दो सहस्र वानरों की सेना थी"; **"रामस्य वानरसैन्यानां द्विसहस्री आसीत्'** । "मेरे पास ३०० पुस्तकें हैं"; **"मम पुस्तकानां त्रिशती अस्ति"** ।

(४) दो या तीन, तीन या चार, चार या पाँच—इस प्रकार अनिश्चित संख्या को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त संख्याओं के संस्कृत शब्दों को मिलाकर पिछले शब्द को अकारान्त कर देना चाहिए । उसके आगे विशेष्य के अनुसार विभक्ति और वचन होते हैं, यथा—**"मैं पाँच छः दिन में यह काम करूँगा"**; **"अहं पञ्चषैः दिनैः कार्यमेतत्करिष्यामि"** । **मैं सात-आठ दिन ठहरकर घर जाऊँगा"**; "सप्ताष्टानि दिनानि स्थित्वा आलयं गमिष्यामि" । **मैंने व्याकरण दो-तीन महीने में पढ़ा है"**; **"अहं द्वित्रैः मासैः व्याकरणमधीतवान्"** । **मैंने अपने पुत्र को प्यार से दो-तीन फल दिये"**, **"अहं द्वित्राणि फलानि सस्नेहं पुत्राय दत्तवान्"** । **"यहाँ तीन चार बन्दर हैं"**; **"अत्र त्रिचतुरा वानराः सन्ति"** ।